B.M.A. College Baheri, Darbhanga

Date:- 05/07/2020
Dept of Sociology
By. Dr. Rajesh Kr

B.A (Hons) - I
पेपर - II
B.A (ऑनर्स) - I
पेपर - II
Sociology

विषय: दुर्खीम का आत्महत्या का सिद्धांत

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक आत्महत्या की रचना फ्रांसीसी भाषा में 'Le Suicide' के नाम से की, जिसका प्रकाशन 1897 में हुआ। दुर्खीम ने अपनी इस पुस्तक में आत्महत्या को सामाजिक तथ्य के रूप में प्रस्तुत किया है।

वे आत्महत्या के लिए वैयक्तिक एवं मनोवैज्ञानिक कारणों को उत्तरदायी नहीं मानते बल्कि सामाजिक कारकों को ही उत्तरदायी मानते हैं। इस पुस्तक की रचना इन्होंने तीन खण्डों में की है। इनका कहना है कि समाज एवं समूह ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देता है जिससे विवश होकर व्यक्ति आत्महत्या करता है। जब सामाजिक जीवन में एकता का अभाव हो जाता है तो व्यक्ति अपने को असुरक्षित महसूस करता है और ऐसी अवस्था में वह अपने जीवन को समाप्त करने की कोशिश करता है। जब समूह की परिस्थितियाँ व्यक्ति के जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती हैं जिसके कारण वह अपने आप को अकेला एवं दुःखी महसूस करता है और वह सोचता है कि अब उसका सामाजिक जीवन नष्ट हो गया है एवं उसका स्वयं पर से आत्मविश्वास कम हो जाता है और अपने आप को उपेक्षित और अकेला महसूस करने लगता है और सोचता है कि अब वह जीकर क्या करेगा, सो वह अपनी इहलीला समाप्त कर लेता है।

दुर्खीम ने आत्महत्या को मुख्यतः तीन प्रकारों में विभाजित किया है:

- अहंवादी आत्महत्या: इसमें व्यक्ति स्वयं में इतना डूब जाता है कि उसे महसूस होने लगता है कि सब उससे उपेक्षा करने लगे हैं।
- परार्थवादी आत्महत्या: व्यक्ति सामूहिक हित के प्रति इतना निष्ठावान हो जाता है वह समूह की खातिर स्वयं को बलिदान कर देता है।
- आदर्शहीनता या अप्रतिमानित आत्महत्या: जब व्यक्ति के जीवन में आकस्मिक उतार-चढ़ाव आता है तब वह अचानक आत्मविश्वास, निराशा या दुःखी होकर आत्महत्या कर लेता है।

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga
Date:- 25/04/2020
B.A.-I (Gen & Hons)
Deptt. of Sociology
Subject: Sociology
By: Dr. Rajesh Kr
Sociology

विषय: समाजीकरण के अभिकरण

जन्म से लेकर मृत्यु तक जब हम समाजीकरण की प्रक्रिया को देखते हैं एवं अच्छी तरह से समझते हैं तो हमें यह पता चलता है कि समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार, समाज, समूह, संगठन, संघ एवं संस्थाएँ समाजीकरण की प्रक्रिया में सहायता करती हैं। इस दृष्टि से इन प्रमुख अभिकरणों की कार्य प्रणाली को समझना होगा, जो समाज के मूल्यों एवं मानदण्डों के अनुसार एवं विशेष ढंग से व्यक्ति का समाजीकरण करते हैं।

समाजीकरण के अभिकरण को दो भागों में बाँटा जाता है:

1. प्राथमिक अभिकरण अथवा 2. द्वितीयक अभिकरण

1. प्राथमिक अभिकरण:

- परिवार: बच्चे का प्रथम समाजीकरण उसके परिवार में ही होता है, जिसमें उसकी माँ की विशेष भूमिका होती है।
- क्रीड़ा समूह: इस समूह से मिलने वाला पर्यावरण एवं व्यवहार परिवार से भिन्न होता है। यहाँ बच्चे में आत्मविश्वास का विकास होता है साथ यौनिक क्रियाओं की जानकारी भी प्राप्त होती है।
- पड़ोस: यह समूह बच्चे में सहानुभूति, अपनापन, प्यार, संयम, सच्चरित्रता एवं ईमानदारी जैसी विशेषताओं को प्रकाशित करता है।
- विद्यालय: यहाँ वह अपने सहपाठियों के बीच सहनशीलता, विश्वास, नैतिकता, ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठता को सीखता है।
- नातेदारी समूह: इस समूह में बच्चे के नातेदारों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। यहाँ वह पारिवारिक सम्बन्धों, नातेदारी सम्बन्धों, वैवाहिक, मातृवंशीय एवं पितृवंशीय सम्बन्धों को समझता और सीखता है।

2. द्वितीयक अभिकरण:

- आर्थिक समूह: यह समूह व्यक्ति को जरूरत के आधार पर मान्यताओं के द्वारा आर्थिक अर्जन की कला को सिखाता है ताकि व्यक्ति अपने अनुसार जीवन जी सके।
- सामाजिक समूह: इस समूह से वह अपनी भूमिका, स्थिति एवं प्रतिष्ठा को अर्जित करता है।
- सांस्कृतिक समूह: यहाँ वह, खाने-पीने के तरीके, भाषा, रहन-सहन के तरीके, कला, विश्वास, वेश-भूषा एवं परम्परा को सीखता है।
- राजनीतिक समूह: यह समूह व्यक्ति को नियम-कानून, अनुशासन, संगठन, दल, कानून बनाने के तरीकों से परिचित करता है। यह व्यक्ति में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करता है। यहाँ वह सरकार, शासन सत्ता के विचारों की जानकारी प्राप्त करता है और सहयोग करने का भी